प्रगति (Progress)

जब किसी परिवर्तन को समाज के हित में अच्छा या लाभकारी माना जाता है तो उसे

Scanned with CamScanner

प्रगति (Progress) कहा जाता है। प्रगति सामाजिक परिवर्तन की एक निश्चित दिशा को दर्शाती है। प्रगति में समाज-कल्याण और सामूहिक-हित की भावना छिपी होती है। ऑगबर्न एवं निमकॉफ ने बताया है कि प्रगति का अर्थ अच्छाई के निमित्त परिवर्तन है। इसलिए प्रगति इच्छित परिवर्तन है। इसके माध्यम से हम पूर्व-निर्धारित लक्ष्यों को पाना चाहते हैं।

मकीवर एवं पेज (1985) का सुझाव है कि हमलोगों को उद्विकास और प्रगति को एक ही अर्थ में प्रयोग नहीं करना चाहिए। दोनों बिल्कुल अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। प्रगति कहने से एक निश्चित दिशा में विकास का बोध होता है और वह विकास हमेशा इच्छित विकास होता है। समाज के लोग यह चाहते हैं कि किसी विशेष किस्म की प्रगति चलनी चाहिए। वैज्ञानिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार होना प्रगति का एक उदाहरण है, क्योंकि इसके माध्यम से समाज को हम एक इच्छित दिशा में ले जाना चाहते हैं। प्रगति एक **योजनाबद्ध सामाजिक परिवर्तन (Planned Social Change)** है। मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होना उद्विकास कहा जाएगा। इस बात की पुष्टि मकीवर एवं पेज (1985: 522) के निम्नलिखित विचार से होती है– "When we speak of progress we imply not merely direction, but direction toward some final goal, some destination determined ideally, not simply by objective consideration of the forces at work".

सामाजिक प्रगति की अवधारणा को अच्छी तरह समझने के लिए प्रगति एवं उद्विकास के बीच अन्तर को ध्यान में रखना उपयुक्त प्रतीत होता है। दोनों के बीच मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं–

(A) उद्विकास की प्रक्रिया स्वत: प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलती है जबकि प्रगति वांछित दिशा की ओर एक नियोजित परिवर्तन है।

(B) उद्विकास एक मूल्य-निरपेक्ष अवधारणा है, जबकि प्रगति मूल्य-सापेक्ष (Value Loaded) अवधारणा है।

(C) उद्विकास को समाज और संस्कृति में अन्तर्निहित कारकों पर आधारित माना जाता है, जबकि प्रगति मानव की उन्नति की भावना से जुड़ी हुई है। यह मानव के सार्थक प्रयासों को दर्शाता है।

(D) उद्विकास की प्रक्रिया धीमी गति से चलती है, जबकि प्रगति की प्रक्रिया धीमी या तीव्र कुछ भी हो सकती है।

(E) उद्विकास जीवों के विकास की अवधारणा से जुड़ा है। जीव-विज्ञान के बाद ही सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में उद्विकास की अवधारणा प्रचलित हुई है। दूसरी ओर, प्रगति की अवधारणा इतिहास दर्शन से प्रभावित है।

(F) उद्विकास का परिप्रेक्ष्य विश्वव्यापी होता है, जबकि प्रगति का परिप्रेक्ष्य एक देश और समाज विशेष होता है।

Scanned with CamScanner